RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 29
सृष्टि संवत् 1960853116
18 अक्तूबर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2392926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 29, 15/18 अक्तूबर 2015 तदनुसार 2 कार्तिक सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान् परिश्रमी की रक्षा करते हैं

–ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

यस्त इध्मं जभरत्सिष्विदानो मूर्धान वा ततपते त्वाया।
भुवस्तस्य स्वतवाँः पायुरग्ने विश्वस्मात्सीमघायत उरुष्य॥

–ऋ० ४।२।

शब्दार्थ-सिष्विदानः–पसीना–पसीना होता हुआ **यः**–जो **ते**–तेरे लिए **इध्मम्**–ईर्ष्या समिधा **जभरत्**–लाता है अथवा **ते**–तेरे **इध्मम्**–प्रकाश को **जभरत्**–धारण करता है **वा**–आर्ष **त्वाया**–तेरा अभिलाषी होकर **मूर्धानम्**–माथे को **ततपते**–बार–बार तपाता है, **हे अग्ने**–सर्वरक्षक तू **तस्य**–उसका **स्वतवान्**–परनिरपेक्ष बलवान्, अपने बल से बली होता हुआ **पायुः**–रक्षक **भुवः**–होता है। हे प्रभो! तू **सीम्**–उसको **विश्वस्मात्**–सभी **अघायतः**–हानिकारों से **उरुष्य**–बचा।

व्याख्या–भगवान् ने अपना प्राकृतिक ऐश्वर्य जीवों को अर्पित कर रखा है। प्रकृति के एक भी अणु–परमाणु को वह अपने निजी स्वार्थ के लिए नहीं बरतता। वह जीवों को भोग मोक्ष देने के लिए संसार का पसारा पसारता है। जीवों के कर्मों के अनुसार उनके लिए नए–नए संसार बनाता रहता है। भोग में लिप्त होने वाले, कर्त्तव्यभ्रष्ट जीव को भोग से उठा उसे पुनः कर्त्तव्य पथ पर लाने के लिए उसे बार–बार चेतावनी भी देता रहता है। इस पर भगवान् मानो निरन्तर क्रियावान् है। स्वाभाविक है कि भगवान् की प्रीति भी उन्हीं को हो सकती है, जो भगवान् के समान अपना सब कुछ दे डालने वाले हों। जब कोई मनुष्य स्वार्थ भावना से रहित होकर कोई शुभ कर्म करता है तो वह भगवान् का कार्य करता है, उस निष्काम–भाव से कर्म करना भगवान् के अर्पण करना है। इस प्रकार के कर्म करने वालों का रक्षक भगवान् होता है।

भगवान् की प्रीति–प्राप्ति के लिए भी स्वार्थ त्याग करना आवश्यक है। कोई वस्तु किसी को देते समय अपने अभिमान के मर्दन के लिए मनुष्य को कहना चाहिए–'प्रभो! तेरा दिया तुझे देने लगा हूं।' परिश्रम से की गई कमाई को जो भगवान् के मार्ग में दे डालता है, सचमुच भगवान् ही–'भुवस्तस्य स्वतवाँ पायुः' उसके रक्षक होते हैं। रक्षा करने के लिए दया को किसी अन्य शक्ति की सहायता की अपेक्षा नहीं हुआ करती, वह 'स्वतवान्' स्वयत बलवान् है।

पापों का मूल स्वार्थ है। जिसने स्वार्थ त्याग दिया, जो अपने लिए समिधा नहीं करते वरन्–'यस्त इध्मं जभरत्' जो तेरे लिए समिधा लाता है, जो बार–बार–इदं न मम [मेरा नहीं है] कहता है, उससे पाप की सम्भावना कैसे? अथवा 'सिष्विदानो मूर्धान वा ततपते त्वाया'–पसीना–पसीना होता हुआ तेरा अभिलाषी होकर माथे को बार–बार तपाता है। मूर्धा को भगवान् के लिए तपाना बड़ा विकट कार्य है। इसमें मनुष्य पसीना–पसीना हो जाता है, किसी साधक से पूछो, कितना माथा तपता है, कितना पसीना आता है। इतना परिश्रम करने पर वह अपनी रक्षा से बेसुध हो जाता है, अतः भगवान से प्रार्थना करता है–'विश्वस्मात्सीमघायत उरुष्य'–उसे सभी अनिष्टों से, हानि करने वालों से बचा। भक्त की रक्षा भगवान् के सिवाय कौन कर सकता है? अतः प्रभो! तू ही उसकी रक्षा कर। 'अवितासि सुन्वतो वृक्तबर्हिष' [४।८।३६।१] घर–द्वार छोड़ चुके हुए, निराश्रय याज्ञिक का तू ही रक्षक है। घर बार छोड़कर जो यज्ञ करता है, वह अवश्य भगवदाश्रित ही होता है। शरणार्थी की रक्षा तो भगवान् की टेक हैं। भगवान् से रक्षित सदा–सर्वथा निर्भय एवं निरापद रहता है। इसलिए प्रत्येक उपाय द्वारा भगवान् से रक्षा की प्रार्थना करनी चाहिए।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

विद्वान् लेखक महानुभावों से निवेदन

आर्य जगत् के विद्वान् लेखक महानुभावों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्य मर्यादा साप्ताहिक का दीपावली एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक के लिए दीपावली एवं महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित आपके अप्रकाशित विद्वतापूर्ण लेख सादर आमन्त्रित हैं। आप अपने लेख शीघ्र अति शीघ्र आर्य मर्यादा कार्यालय गुरूदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में भेजने की कृपा करें। समय पर प्राप्त होने वाले लेखों को आर्य मर्यादा विशेषांक में उचित स्थान दिया जाएगा।

–व्यवस्थापक आर्य मर्यादा साप्ताहिक

कृत्या दूषणं-अथर्ववेद

-ले० शिव नारायण उपाध्याय कोटा, राजस्थान

कुछ विद्वानों ने अथर्ववेद पर कई दोषारोपण किए हैं उनमें से एक यह भी है कि अथर्ववेद ने कृत्या अथवा हिंसा को बढ़ावा दिया है जबकि वास्तविक स्थिति एकदम उल्टी है। वेद में कृत्या के दोषों का वर्णन कर उसे दूर करने को कहा गया है।

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः।
सारादेत्वप नुदाम एनाम्॥

अथर्व. 10.1.1

पदार्थ-(यान) जिस (विश्वरुपाम्) अनेक रूप वाली (हस्तकृताम्) हाथों से की हुई (हिंसा क्रिया) को (चिकित्सवः) संशय करने वाले लोग (कल्पयन्ति) बनाते हैं। (इव) जैसे (वधूम्) वधू को (वहतौ) विवाह में (सा) वह (आरात्) दूर (एतु) चली जावे (एनाम्) इसको (अपनुदामः) हम हटाते हैं।

भावार्थ-जो छल करके देखने में सुखद और भीतर से दुःखदायी काम करें उनको यथावत् दण्ड दिया जावे। छली लोग कन्या से विवाह कर उसे व्यर्थ ही हाथों से दण्ड देते हैं ऐसे लोगों को दण्ड दिया जाना चाहिए।

अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम्।
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेसु॥ **अथर्व. 10.1.4**

पदार्थ-(अहम्) मैंने (अनया ओषध्या) इस ओषधि रूप (तापनाशक तुझ राजा) के साथ (सर्वाः कृत्याः) सब हिंसाओं को (अदूदुषम्) खण्डित कर दिया है। (याम्) जिस (हिंसा) को (क्षेत्रे) में वा (याम्) जिसको (गोषु) गौओं में (वा) अथवा (याम्) जिसको (ते) तेरे (पुरुषेषु) पुरुषों में (चक्रुः) उन लोगों ने किया था।

भावार्थ-शत्रु ने जिस हिंसा को खेत में अथवा गौओं में करने का प्रयत्न किया, मैंने उनकी इस योजना को ध्वंस कर दिया है।

अधमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते।
प्रत्यक् प्रतिमहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत्॥अथर्व. 10.1.5

पदार्थ-(अघम्) पाप व बुराई (अधकृते) पाप व बुराई करने वाले को और (शपथः) शाप (शापथीयते) शाप करने वाले को (अस्तु) होवे। उस (दुष्ट कर्म को) (प्रत्यक्) पीछे की ओर (प्रतिप्रहिण्मः) हम हटा देते हैं (यथा) जिससे (वह दुष्ट कर्म) (कृत्या कृतम्) हिंसा करने वाले को (हनत्) मारे।

भावार्थ-बुराई करने वाले को बुराई का फल और शाप देने वाले को शाप का फल मिले। हम उस दुष्ट कर्म को पीछे हटा देते हैं।

प्रतीचीन आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः।
प्रतीचीन कृत्या आकृत्यामून कृत्याकृतों जहि॥

अथर्व. 10.1.6

पदार्थ-(प्रतीचीनः) प्रत्यक्ष चलने वाला (आङ्गिरसः) वेदों को जानने वाला (नः) हमारा (अध्यक्षः) अध्यक्ष और (पुरोहितः) पुरोहित तू (कृत्याः) हिंसाओं को (प्रतीचीः) प्रतिकूल गति (आकृत्य) सर्वथा करके (अमून) उन (कृत्याकृतः) हिंसाकारियों को (जहि) मार डाल।

भावार्थ-वेदज्ञ पुरोहित दुराचारियों को यथावत् अनुसंधान करके उचित दण्ड देवे।

जो दुष्टजन धर्मात्मा लोगों को शत्रु जानकर सताते हैं, उन्हें दण्डित किया जावे।

यस्त्वेवाच परेहीति प्रतिकूलमुदाय्यम्।
तं कृत्येऽभिनिवर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः॥

अथर्व. 10.1.7

पदार्थ-जिस दुष्ट ने तुझसे कहा, उदय को प्राप्त हुए विरुद्ध पक्ष वाले शत्रु को जाकर प्राप्त हो। हे हिंसा क्रिया उसकी ओर लौटकर जा। हम निर्दोषियों को मत चाह।

यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येवर्भुर्धिया।
तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽयं जनः॥ **अथर्व. 10.1.8**

पदार्थ-हे हिंसा क्रिया। (यः) जिस (शत्रु) ने (ते) तेरे (परुंषि) जोड़ों को (सन्दधौ) जोड़ा था, (इव) जैसे (ऋभुः) बुद्धिमान् (शिल्पी) (रथस्य) रथ के (जोड़ों को) (धिया) अपनी बुद्धि से (तम्) उसको (गच्छ) पहुंच (तत्र) वहां पर (ते) तेरा (अयनम्) घर है, (अयम्) यह (जन) पुरुष (ते) तेरे लिए (अज्ञातः) अनजान (होवे)।

भावार्थ-जो व्यक्ति छल पूर्वक किसी की हिंसा करना चाहे उसे दण्डित किया जाना चाहिए।

यद् दुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम।
अपैतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु॥

अथर्व. 10.1.10

पदार्थ-हे हिंसा। (यत्) यदि (दुर्भागम्) दुर्भाग्यशाली अथवा (स्नपिताम्) शुद्ध आचरण वाली अथवा (मृतवत्साम्) मरे बच्चे वाली (शोकतुर स्त्री) के (उपेयिम्) हम पास गए हैं (सर्वम्) सब (पापम्) पाप (मत्) मुझसे (अप एतु) हट जावे (द्रविणम्) बल (मा) मुझको (उप तिष्ठत्) प्राप्त हो।

भावार्थ-यदि मनुष्य से कोई दुष्कर्म हो जावे तो वह यथावत् दण्ड भोग कर पुनः धर्म में प्रवृत्त होकर सुखी होवे।

यदि कुछ व्यक्ति किसी श्रेष्ठ पुरुष में व्यर्थ दोष लगा दे तो विद्वान् लोग उसका अनुसंधान करके उसे दोष मुक्त कर दें।

यदि के पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः।
संदेश्या ३त् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः॥

अथर्व. 10.1.11

पदार्थ-(यत्) यदि (यज्ञे) यह श्रेष्ठ कर्म करने में (पितृभ्य) पितरों को (ददतः) दान करते हुए (ते) तेरा (नाम वा) नाम (जगृहः) उन्होंने लिया है। (सर्वस्मात्) उनके (प्रत्येक) (संदेश्यात्) अभीष्ट पाप से (इमाः) यह (ओषधीः) ओषधियां (ओषधि रूप दुःख नाशक विद्वान पुरुष) (त्वा) तुझको (मुञ्चन्तु) मुक्त करे।

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम्।
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति॥ **अथर्व. 10.1.13**

पदार्थ-(यथा) जैसे (वातः) वायु (भूम्याः) भूमि से (रेणुम्) धूलि को (च) और (अन्तरिक्षात्) आकाश से (अभ्रम्) मेघ को (च्यावयति) सरका देता है। (एवः ऐसे ही (मत्) मुझसे (सर्वम्) सब (ब्रह्मनुत्तम्) ब्राह्मणों द्वारा हटाया गया (दुर्भूतम्) पाप (अप अयति) दूर चला जावे।

भावार्थ-जैसे वायु जमीन से धूलि को और आकाश से मेघों को हटा देता है ऐसे ही मेरे पाप मुझसे हट जावें। विद्वान ब्राह्मण उन्हें हटा देवें।

अयं पन्थाः कृत्येति त्वा नयामोभि प्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः।
तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनौ॥

अथर्व. 10.1.15

पदार्थ-(कृत्ये) हे हिंसा। अर्थात् हिंसक (अयम् पन्थाः इति) यह मार्ग है-(त्वा) मुझे (नयामः) हम ले चलते हैं (अभि प्रहिताम्) हमारे प्रतिकूल भेजी जाए (त्वा) तुझको (प्रति) उल्टा (प्र हिण्मः) हटाते हैं। (तेन) उसी मार्ग से (भञ्जती) टूटती हुई तू (उन पर) (अभि याहि) चढ़ाई कर, (इव) जैसे (अनवस्ती) बहुत रथों वाली (विश्वरूपा) सब अंगों वाली (कुरुटिनी) बांके पन से रोकने वाली (वाहिनी) सेना (चढ़ाई करती है)।

भावार्थ-हिंसा जहां से आती है उसे उल्टा कर वहीं भेज दिया जावे।

परेहि कृत्ये मा तिष्ठे विद्ध स्येव पदं नय।
मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति॥

अथर्व. 10.1.26

पदार्थ-(कृत्ये) हिंसा। (पराइहि) चली जा (मा तिष्ठः) मत खड़ी रह, (विद्धस्य) घायल के (पद से) (इव) जैसे (पदम्) ठिकाने को (नय) पाले। हे शूर (सः) वह (शत्रु) (मृगः) मृग समान है। (त्वम्) तू (मृगयुः) व्याध समान है। वह (त्वा) तुझको (न) नहीं (निकतुम् अर्हति) गिरा सकता है।

भावार्थ-शत्रु की हिंसा का साहस पूर्वक विरोध कर उसे हटा दे।

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव॥

अथर्व. 10.1.29

पदार्थ-(कृत्ये) हे हिंसा क्रिया। (अनागोहत्या) निर्दोषी की हत्या (वै) अवश्य (भीमा) भयानक है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय.....

विजयादशमी का पर्व अवश्य मनाएं

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 22 अक्तूबर 2015 को विजयदशमी का पर्व आ रहा है। विजयदशमी का दिन हिन्दुओं का एक पवित्र दिन है क्योंकि इसी शुभ मुहूर्त में मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने विजय यात्रा आरम्भ की थी और कुछ समय में ही लंकापति रावण का वध कर असंख्य प्राणियों को उसके अत्याचारों से मुक्त किया था। राम की यह विजय धर्म की अधर्म पर अपूर्व विजय थी। राम ने रावण का राज्य छीनने के लिए लंका पर चढ़ाई नहीं की थी और न लंका की प्रजा को दास बनाकर उसका दोहन करने के लिए ही अपितु आर्य परम्परा के अनुसार अत्याचार के उन्मूलन और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए थी। उन्होंने अपनी विजय से सच्चे वीर का आदर्श उपस्थित करके क्षत्रिय धर्म की महिमा का भव्य दिग्दर्शन कराया था। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए अयोध्या या मिथिला से सहायता प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने स्वयं अपने बल पर युद्ध किया था। विजयदशमी का पर्व उस दिन का स्मरण कराता है जब आर्य जाति का जाति सुलभ तेज मौजूद था। जब वह अत्याचार के उन्मूलन और पीड़ितों के रक्षण के लिए शक्तिशाली अत्याचारी के मुकाबले में संगठनात्मक प्रतिभा के बल पर जंगली जातियों को ला खड़ा करना जानती थी। भगवान् राम का हम सत्कार करते हैं क्योंकि उन्होंने आर्य जाति की मर्यादा के अनुरूप नेतृत्व और शौर्य प्रदर्शित किया और विश्वास की भावना को गौरवान्वित किया था।

विजयदशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश में सुसज्जित, सशस्त्र, चतुरंगिणी सेना को खड़ा करके उनकी नीराजना आरती की जाती थी। नीराजना विधि में स्वस्ति और शान्तिवाचन पूर्वक बृहत् होमयज्ञ होता था जिसमें क्षात्रधर्म के वर्णनपरक मन्त्रों से विशेष आहुतियां दी जाती हैं। वैश्यवर्ण या अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने व्यवसाय के वाहन आदि उपकरणों को सुसज्जित और परिमार्जित करके यज्ञ करते थे। राजा लोग विजयदशमी के दिन से अपनी विजय यात्रा का शुभारम्भ करते थे। वैश्य भी अपने वाहनों में बैठकर इसी प्रकार व्यापार यात्रा का प्रारम्भ सूचक अनुष्ठान करते थे। विजयदशमी के दिन से दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा निर्बाध चल पड़ती थी। प्राचीन काल में विजयदशमी का शुद्ध स्वरूप इतना ही प्रतीत होता था। समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन होता चला गया। वर्तमान समय में इस पर्व के अवसर पर राम के अभिनय तथा रामलीला के प्रदर्शन का प्रचार चल पड़ा और जिसने विकृत रूप धारण किया।

दीर्घकाल से विजयदशमी के पर्व पर रामलीला के रचे जाने के कारण जनता में यह मिथ्या धारणा बद्धमूल हो गई है कि विजयादशमी के दिन मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने रावण का वध करके लंका पर विजय प्राप्त की थी। वाल्मीकि रामायण के अवलोकन से इस चिरकालीन कल्पना का निराकरण होता है। वाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है कि आज के दिन राम ने पम्पापुर से लंका की ओर प्रस्थान किया था और चैत्र मास की अमावस्या को रावण का वध कहा गया है। वाल्मीकि रामायण से यह भी विदित होता है कि वर्षा ऋतु के चार मास पर्यन्त रामचन्द्र का निवास पम्पापुर में ही रहा। वर्षा ऋतु के बीतने पर हनुमान सीता की खोज में गए थे। इससे प्रतीत होता है कि विजयदशमी के दिन रावण का वध नहीं हुआ था। रामचन्द्र जी की विजय तिथि चैत्र कृष्णा अमावस है।

आजकल हमारे पर्व केवल परम्परागत रूप में रह गए हैं। उत्तरी भारत के व्यापक भागों में रामलीला मनाई जाती है। रावण, कुम्भकरण और मेघनाद के विशाल पुतले बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिष्ठित किए जाते हैं और विजयदशमी और दशहरे के दिन उन्हें जला दिया जाता है। इन पुतलों को जलाने से अन्याय, अत्याचार और स्वेच्छाचार के प्रतीक तत्वों का नाश नहीं होता। आज देश में ये तत्व अधिकाधिक पनप रहे हैं। इस समय देश में अनेक प्रकार की कुरीतियां फैल रही हैं। देश में भ्रष्टाचार, अन्याय,पक्षपात के दूषण सर्वत्र दिखाई देते हैं। इन कुरीतियों को दूर करने के बजाय हम पुतलों को जलाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। अत: हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम सभी अत्याचारों का संसार से लोप करके विजयादशमी आदि पर्वों के शुद्ध और सनातन स्वरूप को जनता में प्रचारित करें। पर्वों के विषय में जो भ्रान्तियां जन-साधारण में फैल चुकी हैं उन भ्रान्तियों का निराकरण करें। विजयदशमी के पर्व का जो ऐतिहासिक स्वरूप है उस स्वरूप को अपने जीवन के अन्दर अपनाने का प्रयास करें।

विजयदशमी के पर्व पर रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जलाने की प्रथा भी हमारे समाज में फैली हुई है। विजयदशमी का जो ऐतिहासिक स्वरूप है उसे भूलकर हम केवल पुतले जलाने तक सीमित रह गए हैं। अरे रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जलाने वालो! अगर जलाना ही है तो अपने अन्दर छिपे रावण को जलाओ। अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी बुराईयों को जलाओं। अगर स मुच रावण को जलाना चाहते हो तो समाज में जो बुराईयां, कुरीतियां, फैल ही हैं, अमानवीय अत्याचार हो रहे हैं, लूटपाट की घटनाएं हो रही हैं, माँ, बहन और बेटियों पर जुल्म हो रहे हैं, भ्रष्टाचार रूपी राक्षस राष्ट्र को खोखला कर रहा है, इन सबके विरूद्ध लड़ने का संकल्प लो। पुतलों के जलाकर लाखों रूपया बर्बाद करने से अच्छा है कि इन पैसों से किसी गरीब का पेट भरें। पुतले जला देने से बुराईयां समाप्त होने वाली नहीं हैं, अत्याचार मिटने वाले नहीं हैं, भ्रष्टाचार खत्म होने वाला नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो आज तक हमारे देश में कोई बुराई नहीं होती । हजारों वर्षों से हम रावण का प्रतीक मानकर पुतलों को जलाते है। रावण को हम सभी दुष्ट और बुराई का प्रतीक मानते हैं। परन्तु कभी अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयत्न नहीं किया कि कहीं हमारे अन्दर भी तो रावण रूपी अहंकार, क्रोध, लोभ आदि तो विद्यमान नहीं हैं। हमें अपने अन्दर के रावण रूपी दुर्गुणों को नष्ट करना होगा। इसीलिए सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि विजयदशमी पर्व को ऐतिहासिक रूप में मनाएं।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

लाला गंगाराम जी का जन्मदिवस बड़ी धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर की ओर से गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5-10-15 सोमवार से 11-10-2015 रविवार तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें श्री सुरेश शास्त्री महोपदेशक व श्री सतीश सुमन व श्री सुभाष राही की भजन मंडली ने वेद के सिद्धान्त और आर्य समाज के नियमों के अनुसार वेद की कथा का प्रवाह पूरा सप्ताह चलाया जिसे श्रोताओं ने बड़ी लग्न से सुना। रात को रोज ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया।

दिनांक 11-10-2015 को सुबह 9:30 बजे श्री सुरेश शास्त्री व पं. मनोहर लाल जी ने यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आए हुए सभी श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां डाली। यज्ञ के पश्चात माता सत्या, वीरां, बहन कान्ता, सुभाष प्रेमी जी ने भजनों द्वारा निहाल किया। श्री सतीश, सुभाष भजन मण्ड़ली ने, अपने भजनों के माध्यम से लाला गंगाराम जी को अपनी श्रद्धाजंलि भेंट की। श्री सुरेश शास्त्री, श्री कमल किशोर, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी, वरिष्ठ उपप्रधान बाबू सरदारी लाल जी ने अपने विचारों के द्वारा लाला गंगाराम जी के चरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। लाला गंगाराम स्कूल के बच्चों ने बहुत अच्छा कार्यक्रम पेश किया जिन्हें श्री बाबू बनारसी लाल, लाभ चन्द आदि ने तैयार करवाया था। लंगर के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सारे कार्यक्रम को सफल बनाने में पं. मनोहर लाल, राज कुमार प्रधान, राज कुमार रत्न, रमेश लाल रिटायर्ड बैंक, बिसम्बर कुमार, लाभ चन्द, सोम आर्य, राम मिलन, अच्छे लाल, राकेश कुमार रत्न, माता सत्या, माता वीरां, बहन कान्ता, माता शीला, बहन राकेश रानी आदि ने भरपूर सहयोग देकर सारे कार्यक्रम को सफल बनाया

-सुदेश कुमार आर्य महामन्त्री आर्य समाज

वैदिक सत्संग

आर्य समाज रणधीर सिंह नगर का वैदिक सत्संग 18 अक्तूबर रविवार प्रात: 10.30 से 12.30 बजे तक प्रिंसीपल रणधीर शर्मा के निवास स्थान 321-सी बी. आर. एस. नगर में होगा। जिसमें हवन यज्ञ, भजनों के उपरान्त वैदिक प्रवक्ता आचार्य राजू जी वैज्ञानिक के प्रवचन होंगे। सभी परिवार सहित आमन्त्रित हैं। **-रणधीर शर्मा**

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

-ले. सुधा रानी बांसल, 640/8 पंचकूला

भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ माने गये हैं। इन चारों पुरुषार्थों के द्वारा इहलोक और परलोक को सुखमय बनाया जा सकता है। इनमें भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का समन्वय है। वैदिक चिन्तन में इन चारों की सिद्धि करने वाला जीवन ही आदर्श जीवन माना गया है। मनुष्य योनि का वास्तविक ध्येय केवल मोक्ष की प्राप्ति है। हमारा धर्म केवल हर रविवार उपदेश सुनने या मंदिरों में जाकर पूजा करने मात्र से पूरा नहीं हो जाता। उससे तो केवल कुछ समय के लिये विचार शुद्ध हो सकते हैं, पर अन्तिम ध्येय नहीं मिलेगा।

आर्य समाज के दस नियमों में पांचवां नियम कहता है **सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।** वेद भाष्य में भी यहीं दोहराया गया है।

सत्याचरणं धर्मः, न्यायाचरणं धर्मः

धर्म शब्द का सीधा व सरल अर्थ है जो धारण किया जाये। महाभारत में व्यास मुनि कहते हैं:-**धारणात् धर्म इत्याहुः**। धर्म जीने की कला है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है जो धर्म अपनी अन्तर्रात्मा के प्रतिकूल हो वह अधर्म है। हम दूसरों से जिस व्यवहार की इच्छा रखते हैं वहीं व्यवहार हमें दूसरों के प्रति करना चाहिये। मनुष्यों का धर्म है मनुष्यता। जिन इन्सानों में इन्सानियत नहीं है वह **धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः** अर्थात धर्म से रहित पशुवत है। धर्म आदमी को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। धर्म का आचरण के साथ सम्बन्ध है। धर्म जीने की कला सिखाता है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण हैं उन पर आचरण करके ही मनुष्य धार्मिक बनता है। धर्म वह नहीं जो अपने लिये सुखकारी हो,धर्म वह है जो सब के लिये सुखकारी हो। सच्चा धर्म वह है जो इस जीवन को सुखी और शान्त बनाये। धर्म मनुष्य को पशु होने से बचाता है। धर्म आदर्श जीवन शैली है। धर्म ही तो है जो मनुष्य के साथ जाता है, धर्म का आचरण जीवन की नींव हैं। धर्म के विषय में कणाद मुनि ने वैशेषिक दर्शन में लिखा है।

यतोऽभ्युदय-निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः

भारतीय चिन्तन परम्परा में धर्म का स्थान सबसे पहला है। जो व्यक्ति धर्म पथ पर चलने का संकल्प लेता है वहीं से उसका जीवन बदलने लगता है। जब भी मन में कोई गलत भावना जन्म ले तो अपनी आत्मा से पूछो धर्म क्या कहता है? जब मनुष्य आंख कान मुख आदि पर धर्म को पहरेदार बैठाएगा तो इन इन्द्रियों से अधर्म नहीं होगा। धर्म जीवन को पवित्र व ऊंचा उठाता है। भारतीय जीवन पद्धति में दूसरा पुरुषार्थ अर्थ है। मनुष्य जीवन में अर्थ के महत्व को सब जानते हैं, धन जीवन यात्रा के लिये महत्वपूर्ण साधन है। एक कहावत भी है पैसा भगवान तो नहीं पर भगवान से कम भी नहीं। वेदों में भी धन ऐश्वर्य की इच्छा की गई है। सभी सुख साधनों की प्राप्ति धन से ही संभव है। वेद कहता है क्यं स्याम पतयो रयीणाम।

हम धन-ऐश्वर्य आदि के स्वामी बनें। पर धन को धर्मपूर्वक कमाओ। पैसे की इच्छा दोष कब बनती हैं, जब धन की अभिलाषा उग्र हो जाए और उस अभिलाषा में धर्म को छोड़ कर अधर्म का रूप ले ले। जब भौतिक उन्नति बढ़ती है, तब आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है। धर्मपूर्वक कमाया हुआ धन, सुख, शान्ति नीरोगता प्रदान करता है।

अर्थ से पहले धर्म आया है, इसका अर्थ यही है कि धन धर्मपूर्वक कमाया जाये। धन की पवित्रता को मनु ने भी सबसे बड़ी पवित्रता माना है। गलत तरीके से कमाया धन बुराइयों, वासनाओं और भोगों की ओर ले जाता है। आज धार्मिक स्पर्धा का दौर है। हमने जीवन की आवश्यकताएं बहुत बढ़ा ली हैं। चोरी, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार, मिलावटी सामान बेचने में भी आज इंसान को डर नहीं लगता। आज परद्रव्येषु अतिशयाभिलाषः दूसरे के धन की अभिलाषा करना आम बात हो गई है। यजुर्वेद में कहा है-मा गृधः कस्य स्विद्धनम् किसी अन्य के धन की अभिलाषा मत रखो। बिना मेहनत का धन मनुष्य को कुपथगामी बनाता है। वैदिक चिन्तन कहता है कि धन साधन है, साध्य नहीं। धन मेरे लिये हैं मैं धन के लिये नहीं। पर धन लालसा कभी कम नहीं होती कठोपनिषद का यह कथन सत्य है।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः

धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं हुआ है। भारतीय संस्कृति त्यागवादी जीवन का संदेह देती है। भोगवादी संस्कृति पश्चिम की देन है जो धीरे धीरे हम अपनाते जा रहे हैं। आज मानव सुखी नहीं हैं। भर्तृहरि ने भोगों के बारे में संसार को चेताया है भोगे रोगभय भारतीय संस्कृति में धन पर धर्म का अंकुश लगाया है। धर्मपूर्वक जो धन प्राप्त हो वह शुभ हो, मंगलकारी हो। गलत धन पतन का कारण बनता है। धन मनुष्य को और उसके रिश्तों को खत्म कर रहा है। धन तो आता जाता रहता है परन्तु धर्म सदैव साथ रहता है। कहते हैं कि लक्ष्मी की सवारी उल्लू होती है। अकेले लक्ष्मी से प्रकाश रूपी ज्ञान मनुष्य से दूर हो जाता है। जब लक्ष्मी नारायण यानि धर्म के साथ आती है तभी वह सुखकारी होती है।

मनुष्य जीवन का तीसरा पुरुषार्थ काम माना गया है। जीवन में काम की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि बिना कामना के हम किसी भी काम में आगे नहीं बढ़ेंगे स्मृति में भी कहा गया है।

अकामस्य क्रिया काचिद दृश्यते नेह कर्हिचित।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः।

स्त्री पुरुष के आकर्षण और आसक्ति को भी काम कहा गया है। जब परिवार में कोई श्रेष्ठ कर्म-यज्ञ, पूजा सत्संग आदि होता है, तब पुरोहित आशीर्वाद देते हैं सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः हे यजमान तुम्हारी श्रेष्ठ इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण हों। काम सृष्टि के मूल में हैं। संसार को बढ़ाने में यानि संतानोपत्ति का आधार काम है। भारतीय जीवन शैली में चार आश्रम बनाये गये हैं, गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ बताया गया है। भारतीय संस्कृति में गृहस्थ की व्यवस्था अनिवार्य है। गृहस्थाश्रम से गुजरे बिना मनुष्य अपूर्ण रहता है उसे समाज का ऋण भी चुकाना होता है। जीवन चक्र को सरल व सुखदायी बनाने के लिये आश्रम व्यवस्था उपयोगी है। मर्यादित, संयमित, धर्मानुकूल कामवासना की पूर्ति का गृहस्थ में विधान है। गृहस्थ द्वारा ही काम वृत्ति का शमन होता है। हमारे आदर्श भगवान श्रीराम और कृष्ण जी ने भी यही आदर्श स्थापित किया था। संयम रहित काम, दुखों का कारण है। इससे होने वाली हानि दो प्रकार की होती है एक शारीरिक दूसरी मानसिक। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में बताया है।

काम एष क्रोध एष, रजोगुण समुद्भव।
महाशनो महापाप्मा, विद्धेयेनमिह वैरिणम्।

जब कामवासना स्नेह, वात्सल्य, समत्व, सेवा आदि में बदल जाऐगी तब काम वासना स्वतः ही दूर हो जायेगी। वैदिक चिन्तन संसार को संदेश देता है- कामवासना वह आग है जिसमें जितना डालोगे वह उतनी ही बढ़ेगी। पर जब कामवासना पर धर्म का अंकुश लगता है तब विवेक जागता है तब वह मानव उच्च श्रेणी को प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति में काम को धर्मपूर्वक संयम, व मर्यादा में बांधा गया है। गृहस्थ-जीवन को भी आश्रम कहा गया है क्योंकि वह मर्यादित होने से कल्याणकारी है। काम-शुद्धि मोक्षमार्ग की कुंजी है, काम का सीधा सम्बन्ध मन से है। काम-वासना का सीधा सम्बन्ध मन से है। जितने भी संसार में पाप पुण्य, धर्म, अधर्म हो रहे हैं मन ही उनका जनक है। मन की पवित्रता से ही धर्म पथ पर चला जा सकता है। मन को सयंमित रखने के लिये बुद्धि का अंकुश जरूरी है। हमारी सारी प्रार्थनाओं में सद्बुद्धि की प्रार्थना की गई है। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु बुद्धि मन को नियंत्रण में रखती है। बुद्धि में ज्ञान है इसीलिये गायत्री मंत्र में भी धियो यो नः प्रचोदयात् की प्रार्थना की गई है। पर कामवासना की तीव्रता बहुत बार बुद्धि हर लेती है ऐसे में सद्ग्रंथों के आश्रम में आना अच्छा है।

इसी काम को मोक्ष के साथ जोड़ा गया है। यह विरोधाभास प्रतीत होता है पर नहीं प्रत्येक दोष का एक निर्दोष रूप भी है जिसे हम उसका सात्विक रूप कहते हैं। जिसमें दोष नहीं होता। काम वासना का सात्विक रूप प्रेम है। हमें भौतिक जगत से अलग हटना है। आध्यात्मिक को बढ़ाना है तभी हम सत्य को प्राप्त करके मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

मानव जीवन का अन्तिम ध्येय मोक्ष है। क्योंकि हम बार बार जन्म लेते हैं मरते हैं, सदियों से जीव भटकता पर चैन कहीं न पाया। भारतीय जीवन चिन्तन में भी मानव जन्म का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष माना गया है जैसे समस्त नदियों का आधार सागर है अग्नि ऊपर की ओर उठती है। पानी नीचे की ओर जाता है ऐसे ही जीवात्मा का प्राप्य परमात्मा है। न जाने कब से जीव अपने परम प्राप्य प्रभु से बिछड़ा है। जब तक जीवात्मा परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह जन्म मृत्यु के चक्र और भटकन से नहीं छूटेगा। जन्म मरण का यह चक्र अनादि काल से चला आ रहा है।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं।
पुनरपि जननी जठरे शयनम्।।

हमारा जीवन अतृप्त इच्छाओं तथा वासनाओं को तृप्त करने में लगा रहता है। हम मृत्यु को देखते हैं फिर भी सोचते हैं हम नहीं मरेंगे। युधिष्ठर ने भी कहा था कि यही दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य है। हम छोटे छोटे सुख के पीछे भागते हैं। सच्चे आनन्द की प्राप्ति मोक्ष में है।

कठोपनिषद में एक कथा आती है नचिकेता को यमराज ने तीन वरदान देने की बात की है। नचिकेता ने तीसरे वरदान में मृत्यु और जीवन के रहस्य को पूछा है। मरणं मा प्राक्षी यमराज ने नचिकेता को काफी प्रलोभन दिये पर नचिकेता अपने प्रश्न पर अडिग रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पांच महायज्ञ पांच कष्टों को काटने वाले होते हैं

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान, ऋषि-मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेष कर गृहस्थी को पांच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पांच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पांचों यज्ञ पांच किस्म के दु:खों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दु:खों व कष्टों का निराकरण होता है। वे पांच महायज्ञ हैं 1. ब्रह्मयज्ञ 2. देवयज्ञ 3. पितृयज्ञ 4. बलिवैश्व देवयज्ञ 5. अतिथि यज्ञ और कष्ट है। आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियां। पांच यज्ञों से पांच कष्ट कैसे दूर होते हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहां देते हैं।

1. ब्रह्मयज्ञ-ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दु:खों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रात: व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आए विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मन को सब ओर से हटा कर, एकाग्रचित्त से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डाल कर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्यवान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हैं यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठकर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्म यज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण, दया, करुणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र करता है। ब्रह्मयज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ-साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

2. देवयज्ञ-यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पांच जड़ देवता हैं, जिनके नाम हैं, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनाकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसकी सुगन्ध अग्नि में डालने से हमारा गुण बढ़ जाता है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। आक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाइड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बिमारियां रहती हैं, वे दूर हो जाती हैं और शरीर स्वस्थ्य हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देव यज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. पितृ यज्ञ-पितृ-यज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएं पूर्ण होंगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता-पिता व वृद्ध जनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्धविश्वास ही है।

4. बलिवैश्व देव यज्ञ-इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्वदेव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

5. अतिथि यज्ञ-घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैर-भाव रहता है और परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, सन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी, व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना-जाना बना रहेगा। जिस गृहस्थ में सन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर-सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब सन्यासियों और विद्वानों के सद् उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जाएगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जाएगा, तब पति-पत्नी, सास-बहू, भाई-भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जाएगा। इस प्रकार इन पांच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पांच दु:खों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पांच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख को लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद-सप्ताह यानि श्रावणी-उपाक्रम जो 23 से 29 अगस्त 2015 तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रात: के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इसका लाभ अन्य विज्ञ पाठक जन भी उठा सकें। इस भावना से प्रेरित होकर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठकगण उठाएंगे।

पृष्ठ 2 का शेष-कृत्या दूषणं.....

(न:) हमारी (गाम्) गौ (अश्वम्) घोड़े और (पुरुषम्) पुरुष को (मा वधी:) मत मार (यत्र यत्र) जहां-जहां पर तू (निहिता) गुप्त रखी गई (असि) है, (तत:) वहां से (त्वा) तुझको (उत् स्थापयामसि) हम उठाए देते हैं, तू (पर्णात्) पत्ते से (लघीयसी) अधिक हलकी (भव) हो जा।

भावार्थ-हिंसा को सम्बोधन कर कहा गया है कि हे हिंसा। निर्दोष व्यक्ति की हत्या कर देना भयानक है। तू हमारे गाय, घोड़ों और पुरुषों की हत्या मत कर। जहां पर तू गुप्त रूप से काम कर रही है वहां भी हम तुझे खोज लेंगे। तू हलकी हो जा। राजा तुझे दण्डित कर वश में रखेगा। कुछ अपराधी प्रवृत्ति के लोग स्वयं हिंसा न करके अबोध युवकों अथवा अन्य लोगों से हिंसा कराते हैं उन्हें भी दण्ड दिया जाना चाहिए।

यदि स्थ तमसावृता: जालेना-भिहिता इव।

सर्वा: संलुप्येत: कृत्या: पुन: कर्त्रे प्र हिण्मसि॥ अथर्व. 10.1.30

पदार्थ-(यदि) जो तुम (तमसा) अन्धकार से (आवृता) ढक लेने वाले (जालेन) जाल से (अभिहिता: इव) बन्धी हुई के समान (स्थ) हो। (इत्) यहां से (सर्वा:) सब (कृत्या:) हिंसा क्रियाओं को (संलुप्य) काट डालकर (पुन:) फिर (कर्त्रे) बनाने वाले के पास (प्र हिण्मसि) हम भेज देते हैं।

भावार्थ-जो कपटी मनुष्य दीन अज्ञानियों को फंसाकर उनसे हिंसा करावें उनको खोजकर दण्डित किया जावे।

हमने इन मंत्रों के द्वारा देख लिया है कि वेद में हिंसा का विरोध किया गया है। हिंसक लोगों को दण्डित करने को कहा गया है। हिंसा को बढ़ावा नहीं दिया गया है। अब हम एक और मंत्र देकर विषय को विराम देते हैं।

कृत्याकृतो बलगिनोऽभि-निष्कारिण: प्रजाम्।

मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून् कृत्य कृतो जहि॥

अथर्व. 10.1.31

पदार्थ-(कृत्ये) हे कर्त्तव्य कुशल सेना। (कृत्याकृत:) हिंसा करने वाले (बलगिन:) गुप्त कर्म करने वाले (अभिनिष्कारिण:) विरुद्ध यत्न करने वाले की (प्रजाम्) प्रजा (सेवक आदि) को (मृणीहि) मार डाल। (मा उत् शिव:) मत छोड़ (अमून), उन (कृत्याकृत:) हिंसा करने वालों को (जहि) मार डाल।

श्रीमद भगवद्गीता व सत्यार्थप्रकाश के अनुसार जीवात्मा का यथार्थ स्वरूप

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

जीवात्मा के विषय में वैदिक सिद्धान्त हैं कि यह अनादि, अनुत्पन्न, अजर, अमर, नित्य, चेतन तत्व व पदार्थ हैं। जीवात्मा जन्म मरण धर्मा है, इस कारण यह अपने पूर्व जन्मों के कर्मानुसार जन्म लेता है, नए कर्म करता व पूर्व कर्मों सहित नए कर्मों के फलों को भोक्ता है और आयु पूरी होने पर मृत्यु को प्राप्त होता है। संसार में हम जितनी भी प्राणी योनियां देखते हैं, इनमें से प्राय: सभी योनियों से हमारा जन्म हो चुका है। आज यद्यपि हम मनुष्य हैं परन्तु इससे पूर्व अनेकानेक बार इन सभी पशु व कीट-पतंगों आदि योनियों में भी रहकर हमने अपने पापों को भोगा है। मनुष्य योनि ही कर्म व फल भोग अर्थात् उभय योनि है जिसमें मनुष्य अपने प्रारब्ध के फल भोगने के साथ नए कर्म भी करता है और इससे इसके प्रारब्ध में कमी होकर नया प्रारब्ध बनता है। कर्म-फल सिद्धान्त के अनुसार यह नया प्रारब्ध ही उसके भावी जन्म व जन्मों का आधार होता है। हम सबका जीवात्मा एक चेतन तत्व है। चेतन तत्व में ज्ञान व कर्म का होना स्वाभाविक गुण व धर्म है। जीवों में दो प्रकार के ज्ञान व गुण होते हैं, प्रथम स्वाभाविक व दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक गुणों को नैमित्तिक गुणों के द्वारा जीवात्मा मनुष्य योनि में सुधारता है व बिगाड़ता भी है।

सदगुणों व सदाचरण से यह देव कोटि व दुर्गुणों एवं दुराचार से यह असुर कोटि का मानव बनता है। देव कोटि उन्नत व विकसित जीवन होता है और असुरत्व का जीवन गिरावट व अवनति का होता है। प्रत्येक मनुष्य को बुराईयों व असुरत्व को छोड़कर गुणी, विद्वान, सदाचारी व देवत्व कोटि को प्राप्त करना चाहिए। आज के लेख में हम जीवात्मा के बारे में विचार कर रहे हैं। इसका कारण है कि या तो हम जीवात्मा के विषय में जानते ही नहीं या बहुत कम जानते हैं। कुछ बन्धु जीवात्मा विषयक मिथ्या ज्ञान भी रखते हैं जिसका कारण आर्ष व सत्य ग्रन्थों का स्वाध्याय न करना व रात्रि दिन धनोपार्जन व सुख-सुविधाओं से युक्त विलासी जीवन व्यतीत करना है। एक कारण आधुनिक गुरुओं के कुचक्र में फंसना भी है। धनोपार्जन में संलग्न, सुख सुविधाओं की मर्यादा का उल्लंघन करने वाले, वैदिक सिद्धान्तों से अपरिचित और पंच महायज्ञ न करने वाले बन्धुओं का जीवन भी कुछ परिस्थितियों को छोड़कर प्राय: अवनत व पतन का ही जीवन होता है। इसी के लिए आजकल अधिकांश संसार के लोग प्रयासरत हैं। जीवात्मा का यथार्थ स्वरूप जानकर जीवन को सन्तुलित बनाया जा सकता है।

आईए जीवात्मा की चर्चा करें और जीवात्मा का यथार्थ स्वरूप जानने का प्रयत्न करें। जीवात्मा का स्वरूप वर्णित करने वाला श्रीमदभगवतगीता ग्रन्थ का एक श्लोक 2/20 प्रस्तुत है। श्लोक है-'न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूय:। अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥' गीता के इस श्लोक में बताया गया है कि मनुष्यों व प्राणियों का जीवात्मा अनादि व अनन्त है। यह न कभी पैदा होता है और न मरता है। यह कभी होकर नहीं रहता और फिर कभी नहीं होगा, ऐसा भी नहीं है। यह (अज) अजन्मा अर्थात् अनादि, नित्य, शाश्वत अर्थात् निरन्तर चेष्टाशील सनातन तत्व है। शरीर के मरने व मारे जाने पर भी यह मरता नहीं है। सो यदि नारियल का छिलका उतर गया तो हाय! नारियल, हाय! नारियल चिल्लाना मूर्खता है। हम समझते हैं कि श्लोक का हिन्दी में किया गया अर्थ अत्यन्त सरल है जिसे सभी समझ सकते हैं। इसके प्रति किसी मत-मतान्तर को भी कोई आपत्ति नहीं है अन्यथा यह इसका खण्डन अवश्य करते। इसका अर्थ यह भी है कि सभी मतों को जीवात्मा का यह यथार्थ स्वरूप स्वीकार है। गीता में इसके बाद अन्य श्लोकों में भी अनेक महत्त्वपूर्ण बातें कही गई हैं। एक अन्य श्लोक है-'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहणाति नरोऽपराणि' तथा शरीरणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥ इसमें कहा गया है कि जिस प्रकार मनुष्य फटे पुराने वस्त्र उतार कर दूसरे नए वस्त्र ग्रहण कर लेता है उसी प्रकार देही जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर नए दूसरे शरीर को ग्रहण कर लेता है। इस श्लोक में मनुष्य शरीर की उपमा वस्त्रों से दी गई है जो कि यथार्थ ही है। यह श्लोक जीवात्मा विषयक विश्व साहित्य में अत्युत्तम व अन्यतम है। इसके अगले श्लोक में तो जीवात्मा के विषय में बहुत ही महत्त्वपूर्ण बातें कहीं गई हैं। श्लोक है-नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत:॥ 23॥ अर्थात् इस शरीर के स्वामी जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते। आग जला नहीं सकती। पानी गीला नहीं कर सकता और पवन व वायु जीवात्मा को सुखा नहीं सकती। यद्यपि गीता का दूसरा अध्याय पूरा ही पठनीय है और हम पाठकों से इसे पढ़ने की भी सलाह देंगे तथापि हम कुछ अन्य मुख्य श्लोक पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। 'अच्छेद्योऽयमदाह्योऽय-मक्लेद्योऽशोष्य एव च।' नित्य: सर्वगत: स्थाणुर-चलोऽयं सनातन: ॥24॥ अथ चैनं नित्यजातं नित्य वा मन्यसे मृतम्। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥26॥, 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृत्स्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥27॥' तथा 'अव्यक्ता-दीनि भूतानि व्यक्तमध्यान भारत। अवयक्त निधनान्येव तव का परिदेवना ॥28॥'

अब इन श्लोकों के अर्थ पर भी दृष्टि डाल लेते हैं। श्लोकार्थ-यही नहीं कि लोग इस जीवात्मा को काटते नहीं किन्तु यह कट नहीं सकता, यह अच्छेद्य है। यह जल भी नहीं सकता-यह अदाह्य है। यह गल नहीं सकता। यह अक्लेद्य है। यह सूख नहीं सकता-यह अशोष्य है। जीवात्मा नित्य है, सम्पूर्ण देह में अपनी शक्ति के विस्तार से व्यापक है। जीवात्मा स्थिर है, अचल है, सनातन है ॥24॥ यह जीवात्मा छिपा हुआ है। यह एक परमाणु (जीवात्मा) किस प्रकार अनादि अनन्त शक्ति लिए हुए है, यह अचिन्त्य है। इसकी चेतना सुप्त हो सकती है, परन्तु लुप्त नहीं हो सकती। इस दृष्टि से यह अविकार्य है। इसको इस प्रकार का जान कर किसी मनुष्य की मृत्यु पर शोक करना उचित नहीं ॥25॥ गीता के छब्बीसवें श्लोक में श्रीकृष्ण जी अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन! जीवात्मा या तो अजर, अमर, अविनाशी है या क्षण भंगुर है, यह दो ही पक्ष हो सकते हैं। यदि यह अजर अमर है तो क्षण-भंगुर देह के जाने से इसका बिगड़ा क्या ? और यदि यह नित्य मृत है तब तो वह स्वामी ही नहीं रहा फिर तो किसी का कुछ बिगड़ा ही नहीं। जब भोगने वाला ही न रहा तो रोयें किसे ? इसलिए हे महाबाहो अर्जुन! उस अवस्था में तो तुम्हें सुतरां शोक करना उचित नहीं। इस संसार में कोई अनहोनी घटना अचानक हो जाए तो धक्का भी लगे परन्तु सभी मनुष्यों का कालान्तर में मरना तो सुनिश्चित है। इसके अगले श्लोक (जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु) जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, जो मरा है उसका जन्म निश्चित है। इस प्रकार जो अवश्यमेव हो के रहने वाली बात है उस पर शोक मनाना उचित नहीं।

गीता के इस श्लोक में पुनर्जन्म के सिद्धान्त का बहुत ही सुन्दरता से वर्णन मिलता है। हमें लगता है कि इतना सुन्दर निश्चयात्मक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। गीता के दूसरे अध्याय के इन्हीं श्लोकों से अर्जुन का विषाद दूर हुआ था। जो भी दु:खी व्यक्ति इस अध्याय का अध्ययन करता है वह शोक रहित हो जाता है, ऐसा हमारा मानना है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि मृतक का पुनर्जन्म को निश्चयात्मक घोषित करने से मृतक श्राद्ध करना अनुचित व अनुपयोगी सिद्ध होता है। मृतक श्राद्ध की यह परम्परा जितनी जल्दी समाप्त हो जाए अच्छा है क्योंकि इससे जाति का बहुमूल्य समय एक अनावश्यक कार्य पर व्यय होने के साथ धन का भी अपव्यय होता है। अतिनिर्धन लोगों के लिए तो यह अभिशाप है जिन्हें इस कुप्रथा के पालन के लिए दूसरों से कर्ज लेना पड़ता है। गीता के अगले अठाईसवें श्लोक में श्री कृष्ण जी अर्जुन को कहते हैं कि इस संसार में प्राणीमात्र का आदि अव्यक्त है, अन्त अव्यक्त है। केवल मध्य अर्थात् वर्तमान थोड़ी देर के लिए स्पष्ट होता है। अत: जिसके जन्म से पूर्व का पता नहीं, मृत्यु के बाद का पता नहीं तो ऐसी रहस्य में छिपी हुई जीवात्मा के लिए रोना धोना क्या ?

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में भी जीव के स्वरूप, कर्त्तव्य व लक्षण आदि की चर्चा कर महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकाशित किया है। वह लिखते है कि जीव और ईश्वर का स्वरूप गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है ? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि दोनों चेतनस्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सबको नियम में रखना, जीवों को पाप पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्तकर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति, उन का पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे-बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं और जीव के इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदु:खज्ञानान्यात्मनो-लिंगमिति॥ (न्याय दर्शन) एवं प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवन मनोगती-न्द्रियान्तर्विकारा:। (शेष पृष्ठ 7 पर)

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज जालन्धर छावनी द्वारा वेद प्रचार सप्ताह 14 से 20 सितम्बर 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन और भजनोपदेशक श्री अरूण वेदालंकार जी के मधुर भजन हुए। मुख्य कार्यक्रम 20 सितम्बर को प्रात: यज्ञ के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर अलग-अलग हवनकुण्ड़ों पर 30 से ज्यादा परिवारों ने यजमान बनकर यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री विजय शास्त्री जी द्वारा सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर गुरूकुल करतारपुर से आए आचार्य उदयन आर्य ने वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए सुपथ पर चलने की सभी आर्यों को प्रेरणा दी। श्री अरूण वेदालंकार जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा प्रभु भक्ति तथा ऋषि महिमा का गुणगान किया। अन्त में पं. विजय कुमार शास्त्री जी ने सभी को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और कहा कि वेद का पढ़ना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। मंच संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जवाहर लाल महाजन जी ने किया। स्त्री आर्य समाज की बहनों श्रीमती श्रुति अग्रवाल, श्रीमती प्रेमलता गुप्ता तथा श्रीमती सुदेश महाजन ने इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग दिया। के. एल. आर्य स्कूल के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं ने भी इस कार्यक्रम की सफलता में पूरा सहयोग दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री लाला चन्द्रप्रकाश गुप्ता अन्य सदस्य श्री रघुवीर जादौन, अशोक जावेद तथा अशोक गुप्ता ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में भरपूर सहयोग दिया।

-जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज

वैदिक सत्संग समारोह सोल्लास सम्पन्न

पाणिनि महाविद्यालय रेवली के तत्वावधान में आयोजित वैदिक सत्संग समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान का सागर है-वेद। ज्ञान के साधकों के लिए वेद प्रेरणा का स्रोत है। वेदों में परमात्मा का पवित्रतम प्रकाश प्रसारित है। वेद ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिनमें सभी सत्य विद्याओं, ज्ञान-विज्ञान के ज्ञात एवं अज्ञात रहस्यों, सफल जीवन यापन के अनिवार्य सिद्धान्तों को वर्तमान समय की समस्त जटिल से जटिल समस्याओं का पूर्ण समाधान निहित है।

आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने काव्यात्मक शैली में कहा-

मानव हो तो मानव में भेद ना समझा, वेद पढ़के उसकी वेदना समझ, चित्त में परम चैतन्य की चेतना समझ, हृदय के प्रेम में उसकी प्रेरणा समझ।

महाविद्यालय में रहने वाले ब्रह्मचारियों एवं सभी सत्संगप्रेमियों के लिए सूक्ति परक शैली में यशस्वी विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर जी ने कहा कि आलस्य से विद्या की हानि होती है, लापरवाही से व्यापार की हानि होती है, धन की कमी से व्यापार के विकास की हानि होती है, झूठ बोलने से विश्वास की हानि होती है, कटुवचन बोलने से प्रीति की हानि होती है, घमण्ड करने से प्रतिष्ठा की हानि होती है, नेता के बिना दल की हानि होती है और ज्ञान के बिना सर्वत्र हानि होती है। इस अवसर पर स्वामी विदेहयोगी जी, आचार्य श्रवण कुमार जी, आचार्य ओंकार जी, श्री सन्त कपूर जी, श्री ज्योति अरोड़ा जी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्णदेव जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए सारगर्भित एवं ओजस्वी प्रवचन के लिए आभार प्रकट किया।

-सूर्यकान्त मिश्र

पृष्ठ 4 का शेष-धर्म, अर्थ, काम.....

मृत्यु से छूट कर अमृत्व की प्राप्ति क्योंकि मनुष्य शरीर में ही जीवन की सबसे ऊंची उड़ान आध्यात्म तथा मोक्ष संभव है। प्रत्येक हृदय में पाप पुण्य धर्म अधर्म सत्य असत्य, आदि का द्वंद चलता है। जो व्यक्ति तीसरे नेत्र अर्थात ज्ञानचक्षु को खोल कर समझ लेता है वह गलत बातों से बच जाता है। गीता कहती है अज्ञानेनावृतं ज्ञानम् अर्थात अज्ञान से ज्ञान ढका रहता है ऋते ज्ञानान्न मुक्ति बिना सत्यज्ञान के मुक्ति संभव नहीं है। वेद कहता है हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यपिहितं मुखम् विष्णु की फैली माया में जीवन की सच्चाई छुपी हुई है। जिसे बहुत कम ही जान पाते हैं परन्तु जब ज्ञान का प्रकाश आता है तब कर्म बन्धन कटने लगते हैं, गीता कहती है ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। शुद्ध ज्ञान जीवन का आधार है। मोक्ष सुख दुख से मुक्त होने का नाम है। मुक्ति का वास्तविक अर्थ है दुखों से छूट कर अनन्त परमेश्वर में जीवन का आनन्द में रहना। सत्यार्थ प्रकाश में भी मोक्ष प्राप्ति के साधन को बतलाया है जो जीव आर्ष ग्रंथों के अनुसार जीवन यापन करता है प्रभु की आज्ञा का पालन करता है, प्रभु के ध्यान में समाधिस्थ होता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस जीवन को छूटने वाले सुखों के लिये नाश न करें। कठोपनिषद में कहा है।

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।

बुद्धिश्च न विचेष्ठते नामाहुः परमां गति।।

जब शुद्ध मन युक्त पांच ज्ञानेन्द्रियों जीवन के साथ रहत हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है उसको परमगति अर्थात मोक्ष कहते हैं।

धर्म अर्थ काम ये तीनों मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं। हमें इनमें से निकल कर अन्तिम ध्येय तक पहुंचना है। असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतम गमय। आत्मा द्वारा सभी प्रकार के दुखों से जन्म मृत्यु के बन्धन से छूट कर परमात्मा के अनन्त आनन्द में विचरण करने का नाम मोक्ष है।

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात्।।

हे प्रभो, हम शुद्ध गन्ध वाले शरीर, आत्मा और सामाजिक बल को बढ़ाने वाले रूद्ररूप जगदीश्वर की निरन्तर स्तृति करें। जैसे खरबूजा पक जाने पर अपनी डाल से स्वत: ही अलग हो जाता है उसी प्रकार हम शरीर के बन्धन से छूट जाएं और मोक्ष को प्राप्त करें।

पृष्ठ 6 का शेष-श्रीमद्भगवद्गीता.....

सुखदु: खइच्छाद्वेषौ-प्रयत्नाश्वा-त्मनोलिंगानि॥ (वैशेषिक दर्शन)। सूत्रार्थ: (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दु:खादि की अनिच्छा, वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल (सुख) आनन्द, (दु:ख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहिचानना, ये तुल्य हैं, परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना, (अपान), प्राण को बाहर से भीतर को लेना, (निमेष) आंख को मींचना, (उन्मेष) आंख को खोलना, (जीवन) प्राण का धारण करना (मन) निश्चय, स्मरण और अहंकार करना, (गति) चलना, (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि यह स्थूल नहीं है। जब तक आत्मा देह में होता है, तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ कर चला जाता है, तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों, और न होने से न हो, वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान, गुणों के द्वारा होता है। जीवात्मा विषयक यथार्थ ज्ञान का महर्षि दयानन्द का यह उपदेश पाठकों को उनकी अमृतमय देन है। गीता व महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के आधार पर जीवात्मा के यथार्थ स्वरूप का लेख में चित्रण हुआ है। इसे जानकर व समझकर ही मनुष्य मोह व शोक से मुक्त होता है। अत: यह ज्ञान विद्यार्थी जीवन में ही मनुष्यों को करा दिया जाना उचित है। महर्षि दयानन्द ने जीवात्मा के यथार्थ स्वरूप को जाना था। इसीलिए उन्होंने मृत्यु से पूर्व अपने प्राणों के उत्सर्जन का समय निश्चित कर अपने अनुयायियों से वार्तालाप कर उनको समझाया, कुछ को पुरस्कार आदि दिए, सान्त्वनाएं दीं, शौर कर्म कराया, शरीर को स्वच्छ किया, स्वच्छ वस्त्र धारण किए और ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना पूर्वक प्राणायाम के द्वारा अपनी आत्मा को शरीर से बाहर निकाल दिया। ऐसा दृश्य विश्व इतिहास में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। गीता में जीवात्मा का जो स्वरूप वर्णित है वही इसका वैदिक स्वरूप है। सभी मनुष्यों को इसे जानकर वैदिक विधि से ही ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करनी चाहिए और अवैदिक मूर्ति पूजा आदि से बचना चाहिए जिससे कि मृत्योत्तर जीवात्मा उन्नति व ईश्वर की निकटता को प्राप्त हो।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में वेद सप्ताह समारोह का सफल आयोजन

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 5 अक्तूबर से 11 अक्तूबर 2015 तक वेद सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें 5 अक्तूबर को प्रात: 7.30 बजे चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ द्वारा समारोह का शुभारम्भ किया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा पंडित कमवीर शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया। 6 और 7 अप्रैल को भी सुबह यज्ञ का आयोजन किया गया। 7 अक्तूबर को सायंकालीन सभा में पंडित राजेन्द्र शास्त्री समराला वाले तथा पंडित रमेश शास्त्री के मधुर भजन हुये तथा आचार्य रामानंद जी शिमला वाले के प्रवचन हुये। 8 अक्तूबर को सुबह और रात्रि को भी सभा का आयोजन किया गया जिसमें पंडित दिनेश दत्त जी दिल्ली वाले के भजन एवं आचार्य रामानंद जी के प्रवचन हुये। 9 अक्तूबर को सुबह के कार्यक्रम के पश्चात सायंकाल को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती सुशीला भगत जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर ने की। यज्ञ के पश्चात श्रीमती रमेश महाजन, श्रीमती बाला गम्भीर एवं पंडित श्री दिनेश दत्त जी के भजन हुये। इसके पश्चात सुशीला भगत जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये तथा आचार्य रामानंद जी के प्रवचन हुये। महिला सम्मेलन को सफल बनाने के लिये प्रधाना इन्द्रा शर्मा, महामंत्री जनक रानी तथा कोषाध्यक्ष नीलम थापर का विशेष योगदान रहा। महिला सम्मेलन में डा. सुमन शारदा, श्रीमती राजेश शर्मा, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, अंजु चड्ढा, सीमा चड्ढा, सविता चुग, मानसी चुग, किरण नागपाल, किरण टंडन, शशि आहुजा, कमलेश पाहवा, प्रेम पाहवा, रीता अबरोल, अनु गुप्ता, माता सुलक्षणा, पुष्पा गोगिया, सरोज रानी, सुनीता पाहवा आदि सम्मिलित थे। 10 अक्तूबर को सुबह यज्ञ किया गया जिसमें भजन एवं प्रवचन हुये। 10 अक्तूबर को सायंकाल 5.00 बजे शोभायात्रा का आयोजन किया गया जोकि चौंक घंटाघर से शुरू होकर चौड़ा बाजार, चौंक निक्का मल, चावल बाजार से होती हुई आर्य समाज दाल बाजार में सम्पन्न हुई। शोभायात्रा का स्वागत आर्य समाज के वयोवृद्ध अधिकारी श्री मदन मोहन चड्ढा जी के दामाद श्री सुरेन्द्र नागपाल, पुत्री किरण नागपाल तथा सेवा राम नागपाल द्वारा मास्टर अनिल कुमार, गोपाल कृष्ण गुप्ता, नवरंग साडी सेंटर, राजेन्द्र सिंह कालड़ा आदि द्वारा फल फूल बिस्कुल और मिष्ठान द्वारा स्वागत किया गया। शोभायात्राके पश्चात समाज में भजन एवं प्रवचन हुये।

11 अक्तूबर दिन रविवार को 11 हवन कुंडीय चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति की गई जिसमें मुख्य यजमान श्रीमती ज्योति बत्रा एवं अजय बत्रा, श्रीमती नीतू कालड़ा एवं श्री अरुण कालडा, श्रीमती अनिता मरवाहा एवं राजेश मरवाहा, श्रीमती पूनम सूद एवं श्री अजय सूद, श्रीमती सरिता सूद एवं श्री अरुण सूद, श्रीमती रेणु टंडन एवं श्री सुमित टंडन बने। यज्ञ के पश्चात आचार्य श्री रामानंद जी और यज्ञ ब्रह्मा पंडित कर्मवीर शास्त्री जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया तथा फलों का प्रसाद वितरित किया। इसके पश्चात श्रीमती शालू मदान एवं मनीष मदान, श्रीमती राजेश शर्मा प्रधाना जिला आर्य समाज द्वारा ध्वजारोण किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात वेद सम्मलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री संजीव चड्ढा प्रधान आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने की। इसके पश्चात श्रीमती उमा भंडारी एवं श्री बृजेन्द्र मोहन भंडारी, श्रीमती प्रमोद गुप्ता एवं श्री गोपाल कृष्ण गुप्ता द्वारा ज्योति प्रज्वलित की गई। ज्योति प्रज्वलित होने के पश्चात पंडित कर्मवीर शास्त्री एवं श्री दिनेश शास्त्री द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किये गये। इस वेद सम्मेलन में श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि आर्य समाज और वेद कभी भी समाज नहीं हो सकते दोनों का रिश्ता मां बेटी का है। उन्होंने देश के प्रति आर्य समाज की सेवाओं के बारे में जानकारी दी। श्री प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री जी ने अपने भाषण में सभा प्रधान और सभी का धन्यवाद किया। श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा उप प्रधान ने आर्य समाज के प्रचार के लिये सभी को आह्वान किया। पंजाब केसरी के मुख्य सम्पादक श्री विजय चोपड़ा जी ने कहा कि मेरे दादा दादी आर्य समाजी थे, उनका सारा परिवार आर्य समाजी था। उनके परिवार ने देश को आजाद करवाने के लिये कई कुर्बानियां दी हैं। उन्होंने कहा कि हम सब को आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के वेद सप्ताह के अवसर पर मंच पर जनता को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी। उनके साथ बैठे हैं पंजाब केसरी पत्र समूह के मालिक श्री विजय चोपड़ा जी, श्री संत कुमार, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा। (दाएं एवं बाएं) बच्चों को ईनाम देते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री प्रेम भारद्वाज, श्री आचार्य रामानंद जी एवं अन्य सदस्य।

आर्य समाज के प्रधान श्री संजीव कुमार चड्ढा, मंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार टंडन, उप प्रधान श्री संत कुमार, कोषाध्यक्ष श्री रमाकांत महाजन एवं प्रचार मंत्री श्री सुभाष अबरोल ने सब लोगों का स्वागत किया तथा सभी को सहयोग के लिये धन्यवाद दिया। इस वेद सप्ताह को सफल बनाने में पंडित बाल कृष्ण शास्त्री, पंडित योगराज शास्त्री, पंडित सुरेन्द्र शास्त्री, पंडित रमेश शास्त्री, श्री सुरेश कुमार चड्ढा, वेद प्रिय चावला, पुष्प खुल्लर, मास्टर अनिल अजय बत्रा, राजेन्द्र बत्रा, शशि त्रिपाठी, राजेश मरवाहा, विनोद मरवाहा, इकबाल सिंह, सुरेन्द्र धीर, सुशील कुमार महाजन, अरुण सूद, अजय सूद, जगदीश नारंग, सतवीर आर्य, चरणजीत पाहवा, अनिल पाहवा, प्रवीण पाहवा, संजीव खुल्लर, इन्द्रवीर मल्होत्रा, आत्म प्रकाश जी, इन्द्र अग्रवाल कौंसलर, देवेन्द्र जग्गी कौंसलर, सुमित मल्होत्रा कौंसलर, इन्द्रपाल अरोड़ा, कुलदीप राय जी, विजय सरीन, राजेश मेहता, अशोक वैद्य, श्रीमती सरोज वाला, बेटी पारूल, अश्विनी महाजन, माता जनक रानी, नीलम थापर, राजेश माता, इन्द्रा शर्मा, माता सुलक्षणा, सुनीता बत्रा तथा आर्य वीर दल के सदस्य सुमित टंडन, सिद्धान्त अबरोल, अर्पण पाहवा, गौरव पाहवा, मोहित महाजन, अतुल धवन, संदीप गौतम, विक्रम लूथरा, उत्तम चंद, संचिन टंडन, हिमांशु, गुरमीत सिंह, विशाल लूथरा, नवीन मौर्य, अखिल सूद और नयन कुमार चड्ढा का विशेष योगदान रहा, शांति पाठ के पश्चात समारोह सम्पन्न हुआ। सभी कार्यक्रमों के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन हैप्पी खुराना गारमेंटस, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना द्वारा किया गया।

सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी द्वारा आर्य समाज के सभी सदस्यों और आर्य वीर दल के सभी नौजवानों के साथ समाज के कार्यालय में बैठक हुई जिसमें सभा प्रधान जी ने कहा कि वे आर्य समाज के इस आयोजन से बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने सब को प्रोत्साहित करते हुये कहा कि यह समाज आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करती रहे जिसमें वे पूर्ण रूप से अपना सहयोग देंगे। **-संजीव चड्ढा प्रधान आर्य समाज**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।